| MIC-1 | हिंदी साहित्य का इतिहास |
|---|---|

## COURSE OBJECTIVES

हिन्दी साहित्य के हजार वर्षों से अधिक के इतिहास के भाषा-साहित्य के निर्माण की प्रक्रिया से भलीभांति अवगत हुआ जा सकता है। हिन्दी भक्तिकाव्य भारत की सभी भाषाओं के साहित्य में व्याप्त अखिल भारतीय आंदोलन का हिस्सा था। इसके साहित्य के निर्माण में विभिन्न धर्मों, संप्रदायों एवं जातियों का अभूतपूर्व योगदान रहा है। रीतिकाल हिन्दी का एक विशिष्ट काल है। भक्तिकाल से इसकी भिन्नता को आप समझ सकेंगे। आधुनिक काल कविता ही नहीं, गद्य के भी विकास का काल है। इस पत्र के माध्यम से आधुनिकता के विभिन्न स्वरूपों की पड़ताल के साथ साहित्य और समाज के संबंध के नवीन स्वरूप को पहचाना जा सकता है।

| | MIC-1<br>(Theory: 03 Credits) | | |
|---|---|---|---|
| **Unit** | **Topic to be covered** | **No. of Lectures** | **L-T-P 3-1-0 Per weak** |
| 1. | • आदिकालीन साहित्य: नामकरण, काल-निर्धारण, प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं विशेषताएं<br>• निर्गुण एवं सगुण भक्ति काव्य: धाराएँ एवं प्रवृत्तियाँ<br>• रीतिकाल : नामकरण, काल-निर्धारण; रीतिबद्ध, रीतिमुक्त और रीतिसिद्ध काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं विशेषताएं | 14 | |
| 2. | • अधुनिक काव्य : भारतेन्दु युग – नामकरण, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, प्रमुख कवि-लेखक एवं संपादक<br>• द्विवेदी युग: नामकरण, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, प्रमुख कवि-लेखक एवं संपादक<br>• छायावाद : नामकरण, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, प्रमुख कवि-लेखक | 16 | |
| 3. | • प्रगतिवाद, उत्तर छायावाद, प्रयोगवाद, नई कविता, सठोत्तरी कविता : नामकरण, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, प्रमुख कवि-लेखक<br>• हिन्दी गद्य और उसकी विभिन्न विधाओं का विकास | 15 | |
| | कुल | 45 | |

## COURSE OUTCOMES

जनता की चित्तवृत्ति के बदलते स्वरूप के साथ साहित्य के बदलते स्वरूप के संबंध को आप भलीभांति समझ सकेंगे। इस पत्र के माध्यम से विभिन्न युगों के काव्य/ साहित्य के आपसी संबंधों के साथ उनके बीच के अंतर्विरोधों को भी समझा जा सकता है। इस पत्र के माध्यम से समाज और साहित्य के संबंधों के स्वरूप की भी आप व्याख्या कर सकेंगे।